परमात्मा
यानी जीवन का नियम

प्रश्न : ओशो, जब तक आप कोई चमत्कार न दिखाएं, मैं आपको भगवान कैसे मानूं?

कन्हैयालाल,

चमत्कार कभी हुए ही नहीं। चमत्कार हो ही नहीं सकते। चमत्कार का अर्थ होता है : जीवन के नियम के विपरीत कुछ होना, जो कि असम्भव है। जीवन का नियम यानी परमात्मा। परमात्मा के विपरीत कुछ कैसे हो सकता है? जो भी होगा, उसके अनुकूल होगा। जो भी होता है, धर्म के नियम के अनुकूल होता है। हां, तुम्हारी समझ में न आ पड़ता हो नियम, यह बात और। तुम्हें चमत्कार जैसा लगे, यह बात और। लेकिन चमत्कार न कभी हुए हैं, न कभी होंगे। लेकिन तुम्हारे अज्ञान का शोषण किया जा सकता है।

कन्हैयालाल, तुम किसी मदारी की तलाश में हो, तो चले जाओ सत्य सांई बाबा हैं, राख वग़ैरह निकालकर बता देंगे, चमत्कार हो जाएगा। स्विट्ज़रलैंड में बनी हुई घड़ियां निकालकर बता देंगे, चमत्कार हो जाएगा। पता नहीं, यह कैसी सरकार है। तस्करों को पकड़ती है, सत्य सांई बाबा को क्यों नहीं पकड़ती। यह तो तस्करी हुई। स्विट्ज़रलैंड में बनी हुई घड़ियां कोई आदमी निकाले, यह तो तस्करी हुई। राख वग़ैरह तक ठीक है, मगर ऐसे मूढ़जन हैं इस देश में कि राख को विभूति कहेंगे। शब्दों में तो हमसे कोई बाजी नहीं मार सकता। निकलेगी राख और कहेंगे विभूति निकल रही है।

चमत्कार गढ़े जाते हैं, क्योंकि मूढ़ों को प्रभावित करने का और कोई उपाय नहीं है। जीसस ने मुर्दों को जिलाया, हालांकि खुद सूली पर अपने को बचा न सके। जीसस ने अन्धों को आंखें दीं, लेकिन जो सूली पर चढ़ा रहे थे उनको अन्तर्दृष्टि न दे सके! बहरों को कान दिए, लेकिन यहूदी धर्म-गुरुओं को कान न दे सके। कहते हैं लंगड़े-लूलों को पहाड़ चढ़ा दिया, लेकिन खुद जब गोलगोथा की पहाड़ी पर सूली को कन्धे पर रखकर चढ़ना पड़ा तो तीन बार गिरे, पांव लहूलुहान हो गए। लंगड़ों-लूलों को पहाड़ चढ़ा दिया, खुद गोलगोथा की छोटी सी पहाड़ी—टीला ही कहना चाहिए, पहाड़ी भी नहीं—उस पर भी चढ़ने में तीन बार गिर गए। कहते हो कि समुद्र को देखा और शराब बना दिया और जुदास के हृदय को न बदल सके! एकाध बूंद शराब उसमें भी गिरा देते, वह भी मस्त हो लेता! जब सागरों को शराब बना सकते हो तो आदमियों को इतनी मस्ती न दे सके? वह तीस रुपए में बेच दिया जीसस को।

ये कहानियां बाद में गढ़ी जाती हैं। तीन दिन के बाद पुनरुज्जीवित हो गए। लेकिन तीन दिन के बाद फिर क्या हुआ, ईसाइयों के पास कुछ कथा नहीं है कि तीन दिन के बाद पुनरुज्जीवित तो हो गए, फिर क्या हुआ? फिर कहां गए, फिर क्या करते रहे?

ये कथाएं गढ़ ली जाती हैं बाद में—मूढ़ों को प्रभावित करने के लिए। और मूढ़ों की भीड़ है। वही-वही इन बातों से चमत्कृत होते हैं। आदिवासी इलाकों में ईसाइयों का काफी प्रभाव है, क्योंकि आदिवासी सीधे-सादे लोग हैं, उनको छोटी-मोटी बातों से प्रभावित किया जा सकता है।

मेरे एक मित्र हैं। वे मुझे सुना रहे थे कि मैं एक गांव में गया हुआ था। संन्यासी हैं। और वहां एक ईसाई पादरी आदिवासियों को समझा रहा था कि देखो, तुम राम की पूजा इसलिए करते हो न कि वे तुम्हें बचाएंगे? उन्होंने कहा : 'हां।' तो उस पादरी ने कहा : 'पहले तुम यह भी तो पक्का कर लो कि वे खुद को बचा सकते हैं कि नहीं।' उसने दो मूर्तियां अपने झोले में से निकाल लीं—एक मूर्ति राम की, एक जीसस की। राम की मूर्ति तो बनाई थी उसने लोहे की, अन्दर लोहा था, ऊपर से लकड़ी का पॉलिश किया गया था। और दूसरी जीसस की जो मूर्ति थी वह लकड़ी की थी और अन्दर पोली थी। दोनों देखने में एक जैसी लगती थीं। एक बर्तन में पानी भरवाया और दोनों मूर्तियां उसमें डाल दीं। स्वभावतः राम जी डुबकी खा गए और जीसस तैरने लगे। गांव के लोग चमत्कृत हुए। रहे होंगे कन्हैयालाल जैसे। मान गए कि अरे हम भी किसके पीछे पड़े थे। जो खुद अपने को ही नहीं बचा सकता, वह हमको भी डुबाएगा। खुद ही डूब गए बच्चू। वे सब तैयार कि हम भी ईसाई होने को तैयार हैं।

यह संन्यासी भी सब देख रहा था। इसने कहा कि सुनो जी, इसके पहले कि कुछ निर्णय करो, आग जलाओ! इसने देख लिया कि मामला क्या है—एक लोहे की मूर्ति और एक लकड़ी की। 'आग जलाओ! पानी कोई परीक्षा है?'—आदिवासियों से कहा—'हमारे देश में तो सदा से अग्नि-परीक्षा होती रही है।'

लोगों ने कहा : 'यह बात भी सच है।'

'रामचंद्र जी ने सीता की अग्नि-परीक्षा ली थी कि जल-परीक्षा?' सब ने कहा : 'अग्नि परीक्षा ली थी।'

तो उन्होंने कहा : 'अग्नि परीक्षा होकर रहेगी।'

अब पादरी घबराया कि अब यह अग्नि-परीक्षा में तो मुश्किल हो जाएगी। और मुश्किल हो गई। आग जलाई। आग जलाकर दोनों डाल दिए। राम जी तो अपना धनुष-बाण लिये खड़े रहे। क्या आग उनका बिगाड़े! मगर यीशु मसीह की मिट्टी पलीद हो गई। वे राख होकर ढेर लग गए। आदिवासी तो बड़े आनन्दित होकर कूदने-फांदने लगे, नाच-गान शुरू हो गया कि अहा, हमारे रामचंद्र जी! इस बीच पादरी भाग खड़ा हुआ। उसने कहा अब पिटाई होगी। जब संन्यासी ने लौटकर देखा पादरी नदारद था।

चमत्कार का अर्थ होता है : जीवन के नियम के विपरीत कुछ होना, जो कि असम्भव है। जीवन का नियम यानी परमात्मा। परमात्मा के विपरीत कुछ कैसे हो सकता है? जो भी होगा, उसके अनुकूल होगा। जो भी होता है, धर्म के नियम के अनुकूल होता है

इस तरह की बेहूदगी की बातें सिर्फ मूढ़ों को प्रभावित करती हैं। चमत्कार कभी नहीं हुए।

महावीर को माननेवाले कहते हैं कि जब वे रास्ते पर चलते थे तो कांटे अगर सीधे पड़े होते तो महावीर आ रहे हों, तत्क्षण उलटे हो जाते थे। कांटे! इतनी अक्ल फूलों को भी नहीं होती; कांटों को क्या ख़ाक होगी! आदमियों को नहीं होती, कांटों को क्या ख़ाक होगी! और अगर यह सच है तो जिस आदमी ने महावीर के कान में खीले ठोंके थे, उस वक़्त क्या हुआ चमत्कार को? उचककर खीले उसी आदमी के कान में ठुक जाने चाहिए थे। जब कांटों तक में इतनी अक्ल थी तो खीलों में अक्ल न रही। बुद्ध को माननेवाले कहते हैं कि बुद्ध के ऊपर पहाड़ से

एक पूरी चट्टान सरकाई गई। पूरा हिसाब लगाकर सरकाई गई थी कि वह बुद्ध को अपनी लपेट में ले लेगी। बुद्ध पहाड़ी पर बैठे ध्यान कर रहे हैं बीच में, ऊपर से चट्टान सरकाई गई। लेकिन चमत्कार हुआ। वह आई बुद्ध के पास तक, रुकी और बुद्ध को बचाकर निकल गई। उसने अपना रास्ता थोड़ा-सा बदला, बुद्ध को एक तरफ छोड़ दिया और फिर सीधे रास्ते पर चली गई—जहां से उसको जाना चाहिए था। गणित के हिसाब से वहीं से गई, मगर बुद्ध को ज़रा सा बचाकर निकल गई। अगर यह बात सच है तो बुद्ध का फिर विषाक्त भोजन से जीवन अन्त कैसे हुआ? अगर चट्टान में इतनी अक्ल थी तो विष ने कुछ कृपा न की बुद्ध पर कि भोजन में न मिलते या मिल भी जाता भोजन में तो कम-से-कम शरीर को विषाक्त न करता?

यह चमत्कार की आकांक्षा भारत के आलस्य, बेईमानी, सुस्ती, काहिलपन का सबूत है और कुछ भी नहीं। अपने पर भरोसा नहीं रहा है, इसलिए हर उलटी-सीधी चीज़ पर भरोसा लाने की कोशिश की जा रही है। आत्म-भरोसा खो गया है। आत्मा पर श्रद्धा खो गई है

कहते हैं, पागल हाथी बुद्ध पर छोड़ा, जिसने न मालूम कितने लोगों को मार डाला था और वह बुद्ध के सामने आया और उनके चरणों में सिर झुकाकर खड़ा हो गया। मैं तो इतना ही कह सकता हूं कि पागल हाथी या तो पागल ही था। अब पागलों का क्या भरोसा? अरे ये पागल जो कर गुज़रें सो ठीक! पागलों के संबंध में कुछ निश्चित नहीं हुआ जा सकता। वह बुद्ध के सामने झुक गया, यह भी पागलपन का हिस्सा रहा होगा। चमत्कार नहीं। क्योंकि जब आदमी नहीं झुके, जिन्होंने पागल हाथी छोड़ा था, तो पागल हाथी क्या खाक झुकेगा।

लेकिन ये कहानियां पीछे गढ़ी जाती हैं।

बुद्ध का जन्म हुआ तो वे खड़े पैदा हुए मां के पेट से। खड़े-खड़े! अरे ऐसे लोग कोई साधारण ढंग से पैदा होते हैं! मां भी खड़ी थीं। वह फूल तोड़ रही थी वृक्ष से, तब अचानक बुद्ध एकदम से टपक पड़े। ज़रा दर्द नहीं हुआ। दर्द वगैरह होता तो वह भी लेट जाती। वह फूल तोड़ती रही और बुद्ध एकदम से टपक पड़े। इतने ही तक मामला हल नहीं हुआ। अरे जब कहानी ही लोग गढ़ते हैं तो फिर क्या कंजूसी करनी! फिर वे सात कदम चले भी। इतना ही नहीं, अरे जब बात ही करनी है तो फिर पूरी हो जानी चाहिए। सात कदम चलकर आकाश की तरफ देखकर हाथ उठाकर उन्होंने कहा : 'मुझ जैसा बुद्ध न हो पहले कभी हुआ है, न बाद में कभी होगा। मैं परम बुद्ध हूं।' इसकी घोषणा की। गर्जन की! आकाश थर्रा गया, पृथ्वी डोल गई!

कन्हैयालाल, ऐसा कोई चमत्कार देखना है? इस तरह की मूर्खतापूर्ण बातें पंडित और पुरोहित गढ़ लेते हैं क्योंकि कन्हैयालाल जैसे लोग मौजूद हैं। उनकों इस तरह की कहानियां चाहिए। और जो बहुत चालबाज है, वे जिन्दगी में भी इस तरह की कहानियां गढ़ लेते हैं।

बंगाल में एक बंगाली बाबा बहुत प्रसिद्ध थे, क्योंकि उन्होंने एक दफे चमत्कार दिखाया। कन्हैयालाल जैसे लोगों की भीड़ लग गई होगी। चमत्कार उन्होंने यह दिखाया कि वे ट्रेन में सवार हुए, टिकट-कलेक्टर आया, उसने कहा कि टिकट दिखाइए। उन्होंने कहा कि शब्द अपने वापस ले लो। हम फकीरों से कोई टिकट नहीं मांग सकता।

टिकट कलेक्टर भी गुस्से में आ गया। अंग्रेजों के जमाने की बात है। अंग्रेज रहा होगा। उसने कहा : 'इस तरह की बदतमीजी की बात नहीं चलेगी। बाबा हो अपने घर के। वह सरकारी रेलगाड़ी है। टिकट के बिना अन्दर नहीं चलने दूंगा।'

बाबा भी गुस्से में आ गए। बाबा ने कहा : 'देखूं मुझे कौन चलने से रोकता है।'

बात बढ़ गई। बात में से बात निकली। उस अंग्रेज कंडक्टर ने उनको धक्का देकर बाहर निकाल दिया। बाबा नीचे तो उतर गए, लेकिन अपना डंडा ऐसा टेककर खड़े हो गए और कहा कि देखें, अब यह गाड़ी कैसे चलती है। इंच भर सरक जाए!

अब गार्ड झंडी दिखा रहा है और ड्राइवर सब तरह की कोशिश कर रहा है, सीटी पर सीटी बज रही हैं, मगर गाड़ी टस-से-मस नहीं हो रही। तहलका मच गया। पूरे स्टेशन की भीड़ इकट्ठी हो गई, सारे यात्री इकट्ठे हो गए। बंगाली बाबा ने ग़ज़ब कर दिया, गाड़ी रोक दी! ड्राइवर कहे : 'मैं भी चकित हूं, इंजन मे कुछ खराबी नहीं है। सब ठीक है। चलता नहीं।'

स्टेशन मास्टर दौड़ा फिर रहा है, ऑफिसर भागे फिर रहे हैं, मगर कोई उपाय नहीं। आखिर स्टेशन मास्टर ने कहा टिकट कलेक्टर को कि भैया माफ़ी मांग लो और बाबा को कहो आप विराजो अन्दर और गाड़ी चलने दो। लोगों को तो हजार कामों पर जाना है। अब लोग मेरी जान खा रहे हैं। कोई कहता है मुझको अदालत जाना है, कोई कहता है मुझे दफ्तर जाना है और यह गाड़ी कब तक रुकी रहेगी?

पहले तो आनाकानी की टिकट कलेक्टर ने, लेकिन जब देखा कि मारपीट की नौबत खड़ी हो गई, भीड़ इकट्ठी हो गई, भीड़ ने कहा : 'पिटाई कर देंगे! हमारे साधु महाराज का तुमने अपमान किया है। माफी मांगो!' ज़बर्दस्ती माफी मंगवाई। लेकिन बंगाली बाबा ने कहा कि पहले नारियल लाओ। जब तक नारियल नहीं चढ़ेगा, बाबा भी गाड़ी पर नहीं चढ़ेगा। जल्दी भागा-भाग की गई, कहीं से नारियल लाया गया। नारियल, मिठाई, फूल चरणों में चढाए। कहा : 'माफी मांगो! पैर छुओ! और आइन्दा खयाल रखना, कभी किसी फकीर को टिकट मत पूछना। पूछोगे टिकट, खतरा हो जाएगा।'

फिर बाबा गाड़ी में प्रविष्ट हुए और गाड़ी चली। ये बंगाली बाबा ईमानदार आदमी थे। जिन्दगी-भर लोग उनसे पूछते रहे कि राज क्या था, आपने किस तरकीब से गाड़ी रोक दी? मरते वक्त उन्होंने कहा : अब तो मैं मर ही रहा हूं; अब सच्ची बात बता दूं। सच बात यह है कि टिकट कलेक्टर, गार्ड और ड्राइवर तीनों को मैंने रिश्वत दी थी। ये तीनों मेरे आदमी थे। और फिर गाड़ी रुकने में क्या दिक्कत है! और एक दफा यह चमत्कार दिखाना था, दिखा दिया कि सारे बंगाल में शोहरत फैल गई, हजारों-लाखों लोग आते थे बंगाली बाबा के दर्शन करने।

तुम जिनको चमत्कार कहते हो, वे चमत्कार वग़ैरह कुछ भी नहीं होते; उन सबके पीछे हिसाब होते हैं, गणित होते हैं। जादू तो एक गणित है। उनके करने की एक कला होती है। सड़कों पर मदारी दिखाते रहते हैं, उन्हीं को तुम भगवान मानो भैया।

और मैं तुमसे कहता हूं अगर चमत्कार होते भी होते, तो मैं दिखानेवाला नहीं था। क्योंकि मैं कन्हैयालाल जैसे लोगों को यहां बिल्कुल नहीं चाहता हूं। अगर चमत्कार होते भी होते और मैं कर भी सकता होता, तो भी कभी नहीं करता, क्योंकि ये गलत लोग हैं जो चमत्कार के कारण इकट्ठे होते हैं। इन लोगों को दरवाजे के बाहर रखना चाहता हूं, दरवाजे के भीतर नहीं। यहां मैं चाहता हूं उन लोगों को जो जीवन में क्रांति के लिए आतुर हैं। राख वग़ैरह का क्या करोगे? और गाड़ी भी रोक दी तो क्या होगा? और घड़ी भी निकाल दी तो क्या होगा? इन सब बेवकूफ़ी की बातों में मुझे उत्सुकता नहीं है।

हे कन्हैयालाल! हे देवकीनन्दन! हे मुरलीवाले! भैया गौएं चराओ! यहां कहां आ गए? कोई डेयरी खोल लो। अटरली-बटरली...अमूल बटर बेचो। कुछ ढंग का काम करो, यहां कहां! यह तुम्हारे लिए जगह नहीं। बजरंगबली की सेवा करो। हनुमान-चालीसा पढ़ो। हे गोबर्धन गिरधारी! कुछ न बने तो गोबर का छोटा-मोटा पहाड़ बनाकर उसी को उठा लो। तुम्हारे पास ही लोग इकट्ठे हो जाएंगे, तुम्हें कहीं जाने की क्या जरूरत है?

यह चमत्कार की आकांक्षा भारत के आलस्य, बेईमानी, सुस्ती, काहिलपन का सबूत है और कुछ भी नहीं। अपने पर भरोसा नहीं रहा है, इसलिए हर उलटी-सीधी चीज़ पर भरोसा लाने की कोशिश की जा रही है। आत्म-भरोसा खो गया है। आत्मा पर श्रद्धा खो गई है। इसलिए ताबीज, राख, गंडे—इस तरह की चीज़ों पर भरोसा आ रहा है।

एक काहिल सुस्त आदमी अपने मित्र से कह रहा था कि देखो, ईश्वर भी कैसे-कैसे चमत्कार करता है और कैसे-कैसे मेरी मदद करता है! मुझे कुछ पेड़ काटने थे और तूफान ने आकर मेरी समस्या हल कर दी। फिर मुझे कूड़े-करकट का एक ढेर जलाना था और बिजली गिरी, वह भी समाप्त हो गया।

यह सुनकर उसका मित्र बोला : 'भैया, अब आपका अगला प्रोग्राम क्या है?'

वह व्यक्ति बोला : 'इस बार मैंने आलू की खेती करवाई है, अतः उन्हें निकलवाने के लिए भूचाल का इन्तज़ार कर रहा हूं।'

— ओशो
डूबने का आमन्त्रण
चौथा प्रवचन, दूसरा प्रश्न
(पूरा प्रवचन टेप पर भी उपलब्ध है)